ISSN - 2231-1130
वर्ष–सप्तम् ; सितम्बर–2016

राजकमल चौधरी के उपन्यासों में स्त्री-समलैंगिकता की त्रासदी

दीपक कुमार*

राजकमल चौधरी ने अपने उपन्यासों में नारी समलैंगिकता,यौन विकृति ,फिल्म–कल्चर, महानगरों के निम्न वर्गीय तथा उच्च वर्गीय समुदाय, नशा सेवन,विक्षिप्त चरित्र,वीभत्स एवं कुत्सित व्यवहार इत्यादि अनेक समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई। राजकमल ने अपने उपन्यासों में स्त्री समलैंगिकता पर गहराई से प्रकाश डाला है। राजकमल के द्वारा हिन्दी में लिखे गये उपन्यासों में जीवन्त नग्न यथार्थ का उद्घाटन हुआ है। आपके उपन्यासों में कथ्यगत और शिल्पगत नवीनता तथा वैविध्य के महत्वपूर्ण उदाहरण देखने को मिलते हैं। राजकमल ने अपने उपन्यासों में स्त्री–समलैंगिकता की त्रासदी को बड़ी ही प्रमाणिकता के साथ उठाया है।

प्रकृति के विरूद्ध,अमानवीय कृत्यों को, शोषण को राजकमल ने अपनी लेखनी का आधार बनाया। राजकमल ने ऐसे विषयों पर लेखनी चलाई जिस पर बात करने से भी सभ्य समाज कतराता है। 'ताश के पत्तों का शहर' की भूमिका में ही आपने ज्वलन्त समलैंगिकता पर अपनी प्रमाणिक बात रखी–

> 1961 dh
> eSt vkSj pUnzk ds fy,A
> ¼,d loky&D;k rqe nkSukSa
> yfLc;u ugha Fkha \½[1]

राजकमल ने अपने समकालीन समाज और समस्याओं पर खुलकर प्रहार किया है । सभ्य समाज की बिगड़ी लड़कियों की मानसिकता और जीवन शैली पर खुलकर प्रकाश डाला है। शराब, नशा सेवन, मुक्त जीवन

* शोध छात्र, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

यापन ने पूरे जीवन को बर्बाद कर दिया । 'ताश के पत्तों का शहर' की पात्र बन्दना उर्फ बोनी कहती है&^fd lh i;:"k u mxfy;k lHkh ej vkB Li'k ugh fd, g A Li'k fd, g >juk JhokLro u] xkerh u] e t u vkj pUnk u] vkj ekxjV ekl h u A vkj uhye u e> pek g A ejk l;kj fy;k g] e> l;kj fn;k gA e> bu lHkh l l;kj gA[2]

अतिशय स्वतन्त्रता की भावना पुरूषों और नारियों को गर्त में ले जाती है ।आज के आपा–धापी जीवन ने मनुष्यों को यन्त्रवत कर दिया है। मध्य वर्ग की मानसिक त्रासदी को राजकमल ने अपने लेखन का आधार बनाया है। अतिशय सुख प्राप्त करने की भावना ने जीवन को गर्त में डाल दिया है। अश्लील फिल्मों,नशे की चपेट में पड़कर युवक–युवतियाँ अपने जीवन को तबाह कर रहे हैं । अश्लील फिल्मों का यह व्यापार मनुष्य का पशुवत व्यवहार करने को विवश कर देता है।बन्दना(बोनी) अपनी डायरी में लिखती है & ^^e rk ^jxep^ nl j eryc l xbl Fkh A lkpk Fkk fd gtkj&nk gtkj :i;s lt; l mrkj yxh A lt; dh NkVh cgu ehjk l nkLrh d: xh A ehjk tlh [kclijr yMdh ij dydRr e ugh gA e> [kclijr yMfd;k cgr vPNh yxrh g----mu l gkFkkikbl dju e xy e gkFk Mkydj peu e] jtkbl d vUnj fyiV dj lku e----yxrk g e en cu x;h gA ,dne flj l iko rd enA yMfd;k e> ilUn g] en ughA[3]

राजकमल ने बड़ी ही गहराई से अपने समय और समाज की इन सारी समस्याओं पर खुलकर प्रकाश डाला है । समाज की कुरूपताओं ,विडम्बनाओं,विसंगतियों पर उन्होंने खुलकर प्रहार किया है। राजकमल ने मुखौटों के पीछे छुपी हुई सच्चाई को समाज के सामने लाने का प्रयास किया है। अच्छे संस्कारों के अभाव में ये लड़कियाँ गहरी गर्त में जा गिरती हैं। बन्दना उर्फ बोनी अपने साथ–साथ अपनी अनेक सखियों के जीवन को भी

ISSN - 2231-1130
वर्ष–सप्तम् ; सितम्बर–2016

चौपट कर देती है ।अपने शरीर की आग में बोनी कितनी ही लड़कियों के जीवन को तबाह कर चुकी है । इतना ही नहीं वह नए–नए शिकार में प्रतिदिन घूमा करती है । बोनी अपने शरीर की आग को अपनी सखियों से शान्त करती है&^^esa BaMh ugha gS] cUn Tokykeq[kh gS]vkSj jpuk JhokLro ;kSu uhyh dh ikl vkrh gh QV iMrh gS A/k/kdus yxrh gSA uls ru tkrh gS----xesa ykok cgus yxrk gSA^^[4]

राजकमल ने अपने बहुचर्चित उपन्यास ‘मछली मरी हुई’ (1966ई.) में भी स्त्री समलैंगिकता के प्रश्नों उठाया है। शीरीं और उस की बड़ी बहन दोनों समलैंगिक हैं ।दोनों एक साथ ही कमरे में रहती हैं। शीरी कहती है&^^ ,d fnu cMh cgu us fc;j ls Hkjs fxykl dks lkFk le>k;k fd nks vkSjrs Hkh ijLij 'kkjhfjd thou fcrk ldrh gSAfcuk fdlh iq:"k dh lgk;rk ds fcrk ldrh gSA cMh cgu us rjhdk crk;k A viuk cuk, rjhds ij vkxs c<rh xbZ A 'khjh vk'p;Zpfdr Fkh A og cgn mRrsftr Fkh A cgu tks djuk pkgrh djus nsrh Fkh! rfud Hkh budkj ugha] tjk Hkh ,srjkt ugha ! dkbZ iq:"k 'khjh dks bruh 'khryrk] bruh 'khryrk mRrstuk] bruk mRrstd 'kkjhfjd ojnuk ugha ns ldrk FkkA ugha ns ldrk FkkA[5]

किशोरावस्था के भटकाव की आयु होती है । लेकिन बहुतायत माता–पिता , गुरूजन अपने बच्चों को मनोवैज्ञानिक शारीरिक ज्ञान नहीं देते हैं। इन्टरनेट , अश्लील वेबसाइडों से वे अपने शारीरिक उत्तेजनाओं के ज्ञान को पाना चाहते हैं, इस तरह गलत रास्ते की ओर चले जाते हैं। संकोच वश किसी अन्य से वह अपने दिलों की बात को कह भी नहीं पाते हैं। गलत व्यक्तियों की संगति उन्हें बिगाड़ देती है। शीरी की बहन अपने साथ अपने बहन के चरित्र को बर्बाद कर देती है ।शीरीं को सही गलत का ज्ञान ही नहीं होता है। राजकमल आगे लिखते हैं&^^nhnk us cgu jkr esa fcLrj ij bdVBh lksrh FkhaA njokts f[kMfd;kWa cUn dj ysrh FkhA Lkhfyax

ISSN - 2231-1130
वर्ष–सप्तम् ; सितम्बर–2016

Qu ijh LihM e pyrk jgrk Fkk----- 'khjh Hkhx tkrh Fkh mls egls gkrk Fkk] mlds gkFk vkj iko BM iM jg g A te tk jg g A fQj Hkh og cMh cgu ls fyiVh jgrh Fkh A cMh cgu [k'kh ls ph[krh FkhA [k'kh vkj ikxy iu vkj cgk'khA^^6

राजकमल चौधरी का आलोच्य उपन्यास 'मछली मरी हुई' के केन्द्र बिन्दु में नारी समलैंगिकता और अर्थतंत्र का व्यूह है । जिसमें अजीबो गरीब और सर्वथा नवीन विषय का विस्तार दिया गया है। आप ने स्त्री समलैंगिकता के प्रश्नों को बड़ी ही प्रमाणिकता के साथ उठाया है। समलैगिकता के दलदल में फँसी लड़कियों की व्यथा को पूरी ईमानदारी के साथ व्यक्त किया है। राजकमल ने उपन्यास की भूमिका में ही स्वीकार किया है कि&^^1962 e gekj ,d fe=&ifjokj dh nk fL=;k dk ,d lkFk ekufld mRrtuk vkj fo{ki dk dkj.k vLirky Hkstk x;k Fkk-----;g miU;kl mUgh fnuk fy[kk tk jgk FkkA^^7 राजकमल ने समाज के ऐसे विषयों का चयन किया है जो समाज को उन का आइना दिखाते हैं । राजकमल ने अनेक स्थानों पर स्वीकार किया है कि समाज को उन्होंने जैसे देखा , समझा तथा महसूस किया वही बात साहित्य में आप ने लिखी है। इसी उपन्यास के सन्दर्भ में प्रोफेसर देवशंकर नवीन लिखते हैं&^eNyh ejh gbZ miU;kl e vkrddkjh ljxk e eu"; dh ejrh gbZ lonukvk dh [kkt RkFkk ;u&du idkj.k mu v/kjh ljxk dk HkVdko ,o neuh;rk ls efDr dh dFkk gA^^8

राजकमल ने पतित समाज को आईना दिखाने का काम किया । राजनेताओं , उद्योग पतियों, संपादकों , सभ्य कहे जाने वाले लोगों के मुखौटों को उतारकर उनका सही आइना दिखाया है । समाज में फैली कुरूपताओं , भ्रष्टाचारों को राजकमल ने अपने लेखन का आधार बनाकर उन्हें नंगा करने का काम किया है। 'ताश के पत्तों का शहर' उपन्यास में बन्दना सिंह उर्फ बोनी अपनी डायरी में लिखती है&^e D;k cu xbZ \MkDVj ;k tTk \ e

D;k l D;k cu xbl ! vkj ,lk e|> fdlu cuk;k \bl'oj u] ;k lklkbVh u] ;k pkjh&pkjh i<h xbl xUnh fdrkcku uA^9

उपन्यास की इन पात्रों के पास अन्त में कुछ भी नहीं बचता है। जो भी ऐसा कलुषित जीवन यापन करते हैं अन्ततः उन्हें नारकीय जीवन जीने के लिए अभिशप्त होना पड़ता है । इस अंधेरी गुफा में चले जाने के पश्चात् लौटने का कोई भी रास्ता नजर नहीं आता है। राजकमल ने अपने समय, समाज का सच्चा यथार्थ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। शीरीं और बन्दना सिंह अपने साथ अपनी सखियों के जीवन को भी तबाह कर देती हैं। शराब, अफीम, चरस , गांजा, सिगरेट का नशा इन सब को जवानी की उम्र में ही बुढ़ापे का समय ला देता है। जीवन में अच्छे संस्कारों का होना बहुत ही जरूरी है।

lUnHk &

1. ताश के पत्तों का शहर, राजकमल रचनावली ,संपादक देवशंकर नवीन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृ0 283 ।
2. ताश के पत्तों का शहर, राजकमल रचनावली ,संपादक देवशंकर नवीन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृ0 338 ।
3. ताश के पत्तों का शहर, राजकमल रचनावली ,संपादक देवशंकर नवीन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृ0 337 ।
4. ताश के पत्तों का शहर, राजकमल रचनावली ,संपादक देवशंकर नवीन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृ0 340 ।
5. 'मछली मरी हुई', राजकमल चौधरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली , द्वितीय संस्करण 2009, पृ0 122 ।
6. 'मछली मरी हुई', राजकमल चौधरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2009, पृ0 122 ।
7. 'मछली मरी हुई', राजकमल चौधरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2009, पृ0 7 ।
8. राजकमल चौधरी : जीवन एवं सृजन, प्रो. देवशंकर नवीन, प्रकाशन

विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2012, पृ0 245 ।

9. ताश के पत्तों का शहर, राजकमल रचनावली, संपादक देवशंकर नवीन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृ0 341 ।